भारतीय हस्तकला परंपराओं की खोज

परंपरागत हस्तकला में क्षेत्र-अध्ययन और प्रयोग

कक्षा 11 और 12 के लिए

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5007-170-0

प्रथम संस्करण
मई 2011 वैसाख 1933

PD 2T NSY

₹ 110.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ??????????????? द्वारा मुद्रित।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — **फोन :** 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 — **फोन :** 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — **फोन :** 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114 — **फोन :** 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 — **फोन :** 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	:	*नीरजा शुक्ला*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*शिव कुमार*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*गौतम गांगुली*
संपादक	:	*नरेश यादव*
उत्पादन सहायक	:	*?*

आवरण एवं सज्जा
सुनीता कानविंदे

प्राक्कथन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) 2005 में सिफ़ारिश की गई है कि बच्चों के विद्यालयी जीवन को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी पढ़ाई की परंपरा से दूर हटने का संकेत है जो हमारी प्रणाली को आकार देता आया है और विद्यालय, घर तथा समुदाय के बीच एक अंतराल पैदा करता है। एन.सी.एफ. के आधार पर विकसित पाठ्यचर्याएँ और पाठ्यपुस्तकें इस विचार को कार्यान्वित करने का एक प्रयास हैं। इसमें सीखने की यंत्रवत् परिपाटी और विभिन्न विषय क्षेत्रों के बीच एक स्पष्ट सीमा रेखा बनाए रखने को निरुत्साहित करने का भी प्रयास किया गया है। हमें आशा है कि इन उपायों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में बनाई गई बाल-केंद्रित शिक्षा प्रणाली की दिशा में हम और भी आगे बढ़ सकेंगे।

एन.सी.एफ. की एक अन्य मुख्य सिफ़ारिश उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उपलब्ध विकल्पों की संख्या बढ़ाने की है। इस सिफ़ारिश का पालन करते हुए, एन.सी.ई.आर.टी. ने एन.सी.एफ. में सामने लाए गए कुछ नए क्षेत्रों को रचनात्मकता और अंतरविषयक समझ को प्रोत्साहन देने की संभावना के लिए शामिल करने का निर्णय लिया। भारत की विरासत शिल्प कला एक ऐसा क्षेत्र गठित करती है जो शिल्पकला के संदर्भ में सौंदर्यबोध और उत्पादक अब अधिगम्यता की खोज में एक अनोखा स्थान बनाती है और वर्तमान पुस्तक भारत की जीवंत शिल्पकला परंपरा के विशेष अध्ययन की ओर एक नया शिक्षा विज्ञान मार्ग प्रदान करती है। यह मार्ग पृष्ठभूमि ज्ञान के साथ क्षेत्र अध्ययन को जोड़ने और शिल्पकारों तथा इनके शिल्पों में संलग्न अनुभव पर केंद्रित है।

यह प्रयास केवल तभी सफल हो सकता है यदि विद्यालयों के प्रधानाचार्य, माता पिता और अध्यापक इस दिए गए स्थान, समय और स्वतंत्रता को पहचानें, बच्चे उन्हें बड़ों द्वारा दी गई जानकारी के साथ जुड़कर नया ज्ञान उत्पन्न करें। निर्धारित पाठ्यपुस्तकों को परीक्षा का एक मात्र आधार मानना एक महत्वपूर्ण कारण है कि अन्य संसाधन और सीखने के स्थलों की उपेक्षा की जा रही है। रचनात्मकता को पोषण और पहल तभी संभव है यदि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चों को भागीदार के रूप में शामिल करें और उन्हें मात्र ज्ञान के स्थिर ग्राहियों के रूप में न लें।

इनका लक्ष्य विद्यालय के नियमित पाठ्यक्रम और कार्यशैली में बदलाव लाना है। दैनिक समय तालिका में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कलैंडर के कार्यान्वयन पर मेहनत करना, ताकि शिक्षण के लिए समर्पित दिनों की आवश्यक संख्या वास्तव में पूरी की जा सके। शिक्षा और मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त विधियाँ भी यह निर्धारित करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यालय में बच्चों के जीवन में एक सुखद अनुभव लाने में कितनी प्रभावी सिद्ध हुई, बजाय इसके कि वे इसे तनाव या ऊब का एक स्रोत मानें। पाठ्यचर्या के रचनाकारों ने बाल मनोविज्ञान और शिक्षण के लिए उपलब्ध समय पर अधिक ध्यान देते हुए विभिन्न चरणों में ज्ञान की पुन: संरचना और पुन: अभिविन्यास द्वारा पाठ्यक्रम संबंधी भार की समस्या को संबोधित करने का प्रयास किया है। इस पाठ्यपुस्तक में चिंतन और आश्चर्यचकित होने के अवसरों और स्थानों, छोटे समूहों में चर्चा और स्वयं करने के अनुभव वाले क्रियाकलापों को अधिक प्राथमिकता देकर इस प्रयास को आगे बढ़ने की कोशिश की गई है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तक विकास समितियों द्वारा किए गए कठिन परिश्रम की प्रशंसा करती है। कक्षा 11 और 12 के छात्रों के लिए शिल्पकला परंपरा की खोजबीन और प्रलेखन के लिए इस अंत:क्रियात्मक पाठ्यपुस्तक के विकास का कार्य चुनौतीपूर्ण था और इसके लिए मुख्य सलाहकार, डॉ. शोभिता पुंजा के अथक प्रयास प्रशंसा योग्य हैं। हम उन संस्थानों और संगठनों के ऋणी हैं, जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्रियों और कार्मिकों पर कार्य करने की उदारतापूर्वक अनुमति दी। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणी एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नई दिल्ली
नवंबर 2008

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

पुस्तक के बारे में

शिल्प कला की धरोहर के विषय में कक्षा 11 और 12 में तीन इकाइयाँ आपस में संबंधित हैं—1. सैद्धांतिक, 2. क्षेत्र-अध्ययन और 3. अनुप्रयुक्त शिल्प कला। सैद्धांतिक विषय की पाठ्यपुस्तक दोनों कक्षाओं के लिए अलग से तैयार की गई है। यह पुस्तक *भारतीय हस्तकला परंपराओं की खोज* इस पाठ्यक्रम के लिए इकाई 2 और 3 में बताए गए क्रियाकलापों और व्यावहारिक पक्षों पर केंद्रित है और इसका उपयोग कक्षा 11 और 12 दोनों के लिए किया जाना है। पाठ्यचर्या की इकाई 2 में दिए गए प्रलेखन कार्यों को छात्रों को अपने व्यावहारिक क्रियाकलापों के लिए पूरा करना है और दोनों कक्षाओं में दो छोटी और एक बड़ी कार्य योजना के रूप में प्रस्तुत करना है। पाठ्यचर्या की इकाई 3 में बच्चों और अध्यापकों को वह लागू करने का सुझाव दिया गया है, जो उन्होंने सीखा है और देखा है ताकि विद्यालय और घर के परिवेश को बेहतर बनाया जा सके। यह पुस्तक विवरणात्मक नहीं है बल्कि सुझावात्मक है - इसमें अध्यापकों और छात्रों को इससे प्रेरणा लेने का प्रोत्साहन दिया गया है ताकि वे इससे अपनी नवाचारी परियोजनाओं की अभिकल्पना (डिज़ाइन) तैयार कर सकें। कक्षा 11 और 12 दोनों में आपके पास दो लघु और एक बड़ा कार्य है, या प्रलेखन आधारित परियोजना है जिनका आयोजन किया जाना है, इस पुस्तक के दसों अध्यायों में मार्गदर्शी सिद्धांत दिए गए हैं। इसमें छोटे और बड़े कार्यों के लिए परियोजनाओं के व्यापक विकल्प भी दिए गए हैं।

इस पुस्तक को तीन भागों में बाँटा गया है–

भाग I–क्षेत्र-अध्ययन के लिए तैयारी

इसमें पाँच अध्याय हैं जहाँ, छोटे घरेलू और कक्षा के क्रियाकलापों से छात्रों को कार्य करने के लिए तैयार किया जाता है। घर पर किए गए शिल्प कार्य से शुरुआत करते हुए स्थानीय कला तथा वास्तुकला, धरोहर और बाज़ार का अध्ययन करने के लिए, प्रलेखन का प्रारूप तैयार करने तक अध्ययन द्वारा इन अध्यायों से छात्र बड़े अध्ययनों की ओर उन्मुख होते हैं। छात्रों को देखने और सीखने, खोजने और पता लगाने तथा अपनी समझ और ज्ञान से स्वयं उत्पादक बनने तक के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए। ये कौशल सभी के लिए अनिवार्य हैं, चाहे छात्र आगे के जीवन में किसी भी पेशे में जाएँ। इस हिस्से में सुझाई गई क्रियाकलाप-आधारित सीखने की प्रक्रिया अंतर विषयक प्रकार की है। शिल्प कला का अध्ययन समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, पर्यावरण

संबंधी मुद्दों और सौंदर्यबोध की समझ प्रदान करता है। यहाँ सीखे गए कौशल छात्रों के जीवन के सभी पक्षों में मूल्यवान होंगे चाहे वह स्वतंत्र रूप से जीवन के बारे में सोचना हो, विचारों और अनुभवों का विश्लेषण करना सीखना हो, महत्वपूर्ण निर्णय और अन्य अनेक का विकास करना हो।

भाग II–क्षेत्र-अध्ययन

क्षेत्र-अध्ययन के लिए तैयारी के विषय में इन तीनों अध्यायों में क्षेत्र कार्य किया गया है और इस हिस्से के आंकड़े शिल्पकला के प्रलेखन के प्रति समर्पित हैं। क्षेत्र में जाने और शिल्पकारों से मिलने-जुलने से पहले छात्रों को विभिन्न शिल्पकलाओं के विभिन्न पक्षों पर ढेर सारी तैयारी करने की ज़रूरत होगी। इसमें उस विशेष शिल्पकला पर एक अनुसंधान का आयोजन शामिल होगा, जिसमें समुदाय अर्थात उस शिल्प कला को बनाना, सामाजिक मुद्दे; जैसे–लिंग भेद (जेंडर) को शामिल करना, बाल श्रम, समुदाय की स्वीकार्यता और आर्थिक तथा पारिस्थितिक मुद्दे आदि। छात्रों को लिंग, धार्मिक और जातिगत मुद्दों के प्रति सुग्राही बनाया जाना चाहिए। उन्हें हमारे समाज का गर्व और सर्वाधिक रचनात्मक खण्ड बनाने की ज़रूरत है। कक्षा 11 और 12 में क्षेत्र कार्य परियोजनाओं को इस प्रकार बनाने की ज़रूरत है कि वे छात्रों में सहनशीलता विकसित करने में सहायता दें और हमारे समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा किए गए योगदान की प्रशंसा करें। हमें आशा है कि कक्षा के बाहर की दुनिया से मेलजोल के ज़रिए वास्तविक जीवन के अनुभव सीखने की इस प्रक्रिया में अमूल्य होंगे जो जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है।

दो लघु कार्य

लघु कार्यों पर कार्य आरंभ करने में आप सहायता पाने के लिए पहले इस पुस्तक के भाग 1 में अध्याय को पढ़ें और दिए गए अभ्यास कार्य पूरे करें। खोज की यात्रा शुरू करने से पहले हम चाहेंगे कि आप क्षेत्र अध्ययन के लिए स्वयं को तैयार करने के लिए कुछ अभ्यास कार्य करें। लघु कार्यों के सभी विषय क्षेत्र कार्य की प्रक्रिया के एक अनिवार्य हिस्से के रूप में उसे देखने और सीखने से संबंधित हैं। इसमें दिए गए क्रियाकलाप और अभ्यास-कार्य छात्रों को गृह निर्माण के विवरण संबंधी प्रश्न पूछने, शोध करने और प्रश्नावली का उपयोग करने का कौशल अर्जित करने में सहायता देंगे।

कक्षा 11 और 12 के छात्रों को पाठ्यक्रम के इस भाग में प्रतिवर्ष निम्नलिखित दो लघु कार्य करने हैं।

छात्र अपने आसपास के परिवेश का अध्ययन करेंगे और स्थानीय शिल्पकलाओं के बारे में सीखेंगे। वे घर, अपने कस्बे/गाँव में पाए जाने वाले शिल्पों, दस्तकारों और शिल्प समुदाय पर एक लघु कार्य तैयार करेंगे, जो

उनके आस-पास रहते हैं। लघु कार्यों में आरेख, चित्रांकन, फोटोग्राफ, मानचित्र आदि हो सकते हैं।

छात्र अपने लघु कार्यों के लिए निम्नलिखित में से कोई दो विषय चुन सकते हैं।

- घर पर शिल्प कार्य – अभिकल्पना (डिज़ाइन) और कार्य
- स्थानीय विरासत और वास्तुकला – संग्रहालयों, स्मारक, धार्मिक और धर्म निरपेक्ष संरचनाओं में
- बाज़ार की ताकतों को समझना

कार्य शुरू करने से पहले अध्यापक विषयों पर चर्चा कर सकते हैं। वे समुदाय से एक शिल्पकार या ऐसे किसी व्यक्ति को आमंत्रित भी कर सकते हैं जो बच्चों से सहजतापूर्वक बात कर सकें और साथ ही उस क्षेत्र की शिल्प परंपराओं से भलीभाँति परिचित हो।

छात्रों को उत्पादनकर्ताओं तथा उपभोक्ताओं से बात करने की ज़रूरत है ताकि वे उत्पादन और विपणन के विभिन्न पक्षों पर जानकारी प्राप्त कर सकें। उन्हें संग्रहालयों में प्रदर्शित शिल्प और चित्रकला (पेंटिंग), घरों में प्रयुक्त वस्तुओं और शिल्प कृतियों या स्मारकों में अभिव्यक्त शिल्पों का भी अध्ययन करने की ज़रूरत है। वे कपड़ों, आभूषणों, खाद्य पदार्थों, रीति-रिवाज़ों, मेलों, त्योहारों और अन्य जीवंत परंपराओं की भी छानबीन कर सकते हैं।

एक दीर्घ कार्य

आम तौर पर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक विषय क्षेत्र को विद्यालय की समय तालिका में प्रति सप्ताह छह से आठ घंटों का समय दिया जाता है। इस विषय की विशेष प्रकृति को देखते हुए विभिन्न क्रियाकलापों में पर्याप्त समय दिए जाने की आवश्यकता है, इसके लिए विद्यालयों में प्रतिदिन केवल एक काल खंड के बजाय कुछ लंबी अवधि का कालखंड आबंटित किया जाना चाहिए। आम तौर पर शनिवार के दिन विद्यालयों में आधे दिन का समय क्षेत्र-अध्ययन/कार्यशाला/व्यावाहरिक कार्य अथवा पाठ्यक्रम के अनुप्रयुक्त हिस्सों के लिए रखा जा सकता है।

कक्षा 11 और 12 के प्रत्येक छात्र के लिए दीर्घ कार्य अनिवार्य रूप से उस क्षेत्र में प्रचलित किसी एक शिल्प परंपरा का वैज्ञानिक, विधित प्रलेखन होगा। इस प्रकार प्रत्येक कक्षा क्षेत्र की शिल्पकलाओं पर सूचना के निरंतर बढ़ते भंडार से विद्यालय के पुस्तकालय में भी योगदान होगा।

समूह अध्ययन

एक विषय पर एक से अधिक प्रश्न या चर्चा बिंदु होने पर कक्षा को छोटे समूहों में बाँटा जा सकता है और प्रत्येक को उत्तर देने के लिए तथा कक्षा के सामने प्रस्तुतीकरण हेतु एक प्रश्न सौंपा जा सकता है। इस प्रकार हम एक

दूसरे को बता सकते हैं कि हमने क्या सीखा और बड़े प्रश्नों और विचारों के प्रत्येक पहलू को अधिक गहराई से समझने के लिए अन्य व्यक्तियों के साथ अपने विचारों पर चर्चा कर सकते हैं।

भाग III–अनुप्रयुक्त शिल्प

इस भाग में दो अध्याय हैं जो छात्रों को योजना बनाने में सीखी गई बातें लागू करने का एक अवसर देते हैं, कि वे अपने विद्यालय और घर के परिवेश में इसे कैसे समृद्ध करेंगे और आगे बढ़ाएँगे सीखने की इस प्रक्रिया को और अधिक सार्थक तथा संगत बनाएँ। इसके साथ छात्रों को अपने परिवेश के बारे में प्रश्न पूछने, स्थायी उपायों की खोज करने तथा अपने सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में सुधार तथा उन्नति लाने के लिए रचनात्मक विकल्पों का पता लगाने की भी प्रेरणा मिलेगी। इसके लिए सामग्रियों के विभिन्न पक्षों, उनके विकल्पों, स्थायित्व, डिज़ाइनिंग, पैकेजिंग और प्रदर्शन विधियों के साथ नवाचार और प्रयोग द्वारा इसका प्रयास किया जा सकता है।

हम चाहेंगे कि आप अपने क्षेत्र की खोजबीन करें, शिल्पकार समुदायों के पास जाएँ और सराहना सीखें कि भारत के हर शहर, कस्बे और गाँव में रचनात्मक प्रतिभा, कौशलों और अनुभवों वाले कुछ असाधारण व्यक्ति रहते हैं, जो हमारे दैनिक जीवन की समृद्धि को और भी बढ़ाते हैं। जब विद्यालय में इसके विशेषज्ञ उपलब्ध न हों तो हम स्थानीय समुदाय, अभिभावक और कलाकारों से सहायता पाने को भी बढ़ावा देते हैं। एक सच्चे कलाकार को कार्य करते हुए देखने या चाक पर एक कुम्हार को बर्तन बनाते हुए देखने से अधिक प्रेरणादायी और कुछ भी नहीं है। स्वयं करके सीखने और सीखने की प्रेरणा से लंबे समय में निश्चित रूप से बेहतर परिणाम मिलेंगे।

यह पुस्तक देखने और सीखने, सोचने और प्रश्न करने एवं स्वयं को जानने और एक सूमह को समझने का प्रयास करने का आमंत्रण है। याद रखें आप इस कार्यक्रम में अपने ज्ञान के सृजक और निर्माता हैं।

शोभिता पुंजा
मुख्य सलाहकार

फ़ैज़ल अलकाज़ी
सलाहकार

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

मुख्य सलाहकार

शोभिता पुंजा, *परामर्शदाता*, इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट्स एंड कल्चरल हैरिटेज, नई दिल्ली

सलाहकार

फ़ैज़ल अलकाज़ी, शिक्षाविद और रंगकर्मी, *निदेशक*, क्रिएटिव लर्निंग फॉर चेंज, नई दिल्ली

सदस्य

अदिति रंजन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, अहमदाबाद

जया जेटली, *अध्यक्ष*, दस्तकारी हाट समिति, नई दिल्ली

लैला तैयबजी, *अध्यक्ष और संस्थापक सदस्य*, दस्तकार, नई दिल्ली

हिंदी रूपांतर

अवंतिका त्रिपाठी, *अनुवादक*, यू-19, हुडको प्लेस, एंड्रूज़ गंज, नई दिल्ली

उमा शर्मा (पूर्व) *शिल्प संयोजक*, सी.सी.आर.टी, द्वारका, नई दिल्ली
(पूर्व) *टी.जी.टी.*, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, वसंत कुंज, नई दिल्ली

कनुप्रिया तनेजा, *पी.जी.टी.*, टैगोर पब्लिक स्कूल, जयपुर

ज्योति बख्शी, *पी.जी.टी.*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली

मधु मिश्रा, *प्रधानाचार्य*, धनबाद पब्लिक स्कूल, हीरक शाखा, धनबाद

मीनाक्षी कासलीवाल 'भारती', *एसोशिएट प्रोफ़ेसर*, *अध्यक्ष*, चित्रकला विभाग, कानोड़िया पी. जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर

मुश्ताक खान, *उपनिदेशक*, राष्ट्रीय हस्तकला एवं हथकरघा संग्रहालय, नई दिल्ली

सुलेखा भार्गव, *सचिव*, सत्य ग्लोबल रजि. सोसायटी (कलाओं द्वारा मानव जाति में सौंदर्य का उन्नयन), दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

ज्योत्स्ना तिवारी, *एसोशिएट प्रोफ़ेसर*, कला एवं सौंदर्य शास्त्र शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

आभार

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के अलावा अनेक लोग और संस्थान पाठ्यचर्या एवं पुस्तक के निर्माण के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहे हैं। हम इस पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यचर्या विकास हेतु अनिल सिन्हा, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, किरण सेठ, स्पिक मैके, किरण देवेंद्र, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. और पुलक दत्ता, पाठ भवन, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं।

अनेक संस्थानों और संगठनों ने अपने संसाधनों और कर्मियों पर हमें उदारतापूर्वक कार्य करने की अनुमति दी है। हम इनके प्रति विशेष आभार व्यक्त करते हैं– ओ. पी. जैन, संस्कृति फाउंडेशन; एस. के. कौल, *महानिदेशक*, सेंटर फॉर कल्चरल रिसोर्सिस एंड ट्रेनिंग; चारु स्मिता गुप्ता, नेशनल हैंडलूम्स एंड हैंडीक्राफ़्ट्स म्यूज़ियम, नई दिल्ली और डार्ली कोशी, *निदेशक*, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, अहमदाबाद।

राधा एवं ममता गौड़, *कॉपी एडीटर* तथा तनवीर अहमद, नरेंद्र वर्मा व कमलेश राव *डी.टी.पी. ऑपरेटर* विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

इस पाठ्यपुस्तक में विभिन्न शिल्प रूपों के राज्यवार वितरण के मानचित्र रखे गए हैं। ये मानचित्र पैमाने के अनुसार नहीं हैं और मात्र चित्रात्मक प्रतिनिधित्व करते हैं।

विषय सूची